चैतन्य... चैतन्य... चैतन्य

दसवें भव में भगवान महावीर का जीव सिंह की पर्याय में था। एक बार जब वह हिरण को खा रहा था, तभी दो चारण ऋद्धिधारी मुनिराज उसके पास आये। उन्हें देख सिंह स्तब्ध रह गया। तब मुनिराजों ने सिंह से कहा -

अरे ! तू यह क्या कर रहा है ? हमने तो भगवान की दिव्यध्वनि में ऐसा सुना कि तू दसवें भव में तीर्थंकर होने वाला है। अहा ! यह सुनते ही सिंह विचारों में डूब गया। सोचने लगा - ''अरे ! मैं यह क्या कर रहा हूँ और ये मुनिराज क्या कह रहे हैं ?'' अहा ! 'मैं कौन हूँ' इन विचारों के साथ ही उसकी आँखों से पश्चाताप के आंसू बहने लगे और पलक झपकते ही उस सिंह ने शुभाशुभ विकल्पों को तोड़कर चैतन्य परिणति को चैतन्य स्वरूप में जोड़ लिया।

फिर क्या था ? चैतन्य... चैतन्य... चैतन्य ! इसप्रकार चैतन्य स्वरूप की अनुभूति में मग्न हो गया और तत्काल भवबीज के छेदक सम्यग्दर्शन को प्रगट कर लिया।

अहा ! ऐसा तू भी चिन्मात्र आत्मा है। तू स्त्री, पुरुष या नपुंसक नहीं है। पुण्य व पाप भी तू नहीं है और पुण्य-पाप का कर्ता भी तू नहीं है। तू तो चैतन्य की निर्मल परिणति में ज्ञात हो - ऐसा चिन्मात्र आत्मा है।

- प्रवचनरत्नाकर, भाग 8, पृष्ठ 338-339

देवाधिदेव भगवान महावीर

महावीर परमात्मा समस्त मोह-राग-द्वेष को जीतनेवाले हैं, अत: 'जिन' हैं और चैतन्य के पराक्रम से कर्मों के विजेता हैं, अत: 'वीर' हैं। वे श्री वर्धमान, सन्मति, अतिवीर और महावीर नामों से युक्त हैं। वे महावीर भगवान ही परम-ऐश्वर्य अर्थात् केवलज्ञानादि को प्राप्त होने के कारण परमेश्वर हैं। इन्द्र और गणधरदेवों के भी देव होने के कारण देवाधिदेव हैं।

- आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 31 (वीर नि. संवत् - 2539) 357 अंक : 9

धर्म बिन कोई...

धर्म बिन कोई नहीं अपना,
सब सम्पत्ति धन थिर नहिं जग में, जिसा रैन सपना।।टेक।।
आगै किया सो पाया भाई, याही हे निरना।
अब जो करैगा सो पावैगा, तातैं धर्म करना।।
धर्म बिन कोई... ।। 1 ।।
ऐसै सब संसार कहत है, धर्म कियै तिरना।
परपीड़ा बिसनादिक सेवैं, नरकविषैं परना।।
धर्म बिन कोई... ।। 2 ।।
नृपके घर सारी सामग्री, ताकैं ज्वर तपना।
अरु दारिद्री कैं हू ज्वर है, पाप उदय थपना।।
धर्म बिन कोई... ।। 3 ।।
नाती तो स्वारथ के साथी, तोहि विपत भरना।
वन गिरि सरिता अगनि जुद्ध मैं, धर्महि का सरना।।
धर्म बिन कोई... ।। 4 ।।
चित 'बुधजन' सन्तोष धारना, पर-चिन्ता हरना।
विपत्ति पड़ै तो समता रखना, परमातम जपना।।
धर्म बिन कोई... ।। 5 ।।

- कविवर पण्डित बुधजनजी

छहढाला प्रवचन

8 अंग सहित सम्यक्त्व

जिन वच में शंका न धार वृष, भव-सुख-वांछा भानै।
मुनि-तन मलिन न देख घिनावै, तत्त्व-कुतत्त्व पिछानै।।
निज गुण अरु पर औगुण ढाँके, वा निजधर्म बढ़ावै।
कामादिक कर वृषतैं चिगते, निज पर को सु दिढ़ावै।।१२।।
धर्मी सों गौ-वच्छ-प्रीति सम, कर जिनधर्म दिपावै।
इन गुणतैं विपरीत दोष वसु, तिनकों सतत खिपावै।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

अज्ञानी बाह्य में भले ही विषयों का त्यागी हो; परन्तु अभिप्राय में उसको विषयों की वांछा है, क्योंकि राग में सुखबुद्धि है। चैतन्य का इन्द्रियातीत सुख जिसने नहीं देखा, उसको राग और विषयों में सुखबुद्धि का अभिप्राय रहता ही है। यदि उसमें मिठास न लगती हो तो परिणति उससे हटकर अपने चैतन्य सुख में क्यों नहीं आ जाती ? उसने चैतन्यसुख को नहीं देखा और इन्द्रियविषयों में सुख माना, इसलिए उसकी वांछा नहीं मिटी; भले ही विषयों की अभिलाषा प्रगट न दिखती हो; परन्तु अंतर के अभिप्राय में तो विषयों की आकांक्षा विद्यमान ही है।

सम्यग्दृष्टि तो सिद्धों का लघुनन्दन है; वह तो अखंड एक आनंद रसमय ज्ञायकस्वभाव की अनुभूति करके जितेन्द्रिय हो गया। आत्मा को छोड़कर जगत् में कहीं भी उसे सुखबुद्धि नहीं है। पाँचों इन्द्रिय संबंधी राग की वृत्ति आती है तो भी वे उसमें सुख नहीं मानते। उन्हें अंतर के आत्मिक आनंद की ही भावना है। अहा, धर्मात्मा की चेतना के खेल तो धर्मी ही जानते हैं। अज्ञानी बाह्य नेत्र के द्वारा धर्मी का सच्चा माप नहीं निकाल सकता। धर्मी का अंतर/हृदय बाहर से नहीं देखा जाता। धर्मी जानते हैं कि मेरा धर्म मेरे में है, उसका फल बाहर से नहीं आता। बाहर का पुण्यफल तो चावल के ऊपर छिलके जैसा है, अज्ञानी जीव उसे ही देखते हैं, वे

अन्दर के सच्चे वीतरागी रस को नहीं देखते। धर्म के बदले में लौकिक फल को धर्मी नहीं चाहते; दुनिया को दिखाने के लिए वे धर्म नहीं करते। धर्मी का धर्म तो अपने आत्मा में ही समाता है और उसका फल भी आत्मा में ही आता है।

कोई देव सेवा करने को आवे तो धर्मी उससे मोहित नहीं हो जाता और कोई देव आकर त्रास दें तो उससे डरकर धर्मी अपने धर्म को नहीं छोड़ता। वह किसी देव-देवी को धर्मबुद्धि से नहीं मानता। मैं धर्म करता हूँ तो स्वर्ग का कोई देव प्रसन्न होकर मुझे धनादि का लाभ कर देगा - ऐसी बुद्धि धर्मी के नहीं होती। वह सर्वज्ञ-वीतराग अरहंतदेव को छोड़कर अन्य कुदेव को अपना सिर कभी नहीं झुकाता। वह वीतरागता का साधक है, अत: वीतरागी देव के अतिरिक्त अन्य किसी को देव नहीं मानता। जब उसे चैतन्य के वीतरागस्वभाव के अतिरिक्त पुण्य की भी वांछा नहीं है, तब बाहर के पाप-भोगों की वांछा कैसे हो सकती है ? देखो तो सही, इतनी बात तो सम्यग्दर्शन के साथ के व्यवहार में आ जाती है। सम्यग्दर्शन की निश्चय अनुभूति का तो कहना ही क्या ?

अरे, दुनिया के लोग तो बाहर के तुच्छ चमत्कार में मोहित हो जाते हैं; परन्तु हाथ में से कुमकुम निकालना इत्यादि चमत्कार तो तुच्छ अभव्य देव भी दिखला सकता है। उसमें आत्मा का कौन-सा हित है ? धर्मी तो जानते हैं कि सर्वज्ञता और वीतरागता ही मेरे भगवान का सच्चा चमत्कार है; इसके अतिरिक्त वे बाहर के किसी भी चमत्कार के कारण भगवान को नहीं मानते। बाह्य संयोग का आना-जाना तो पुण्य-पाप के अनुसार होता है, धर्म के साथ उसका कोई संबंध नहीं है। धर्मी जीव धर्म के फल में बाहर की आकांक्षा नहीं करते। जब राग से भिन्न आत्मिक आनंद का स्वाद अपने में आया हो, तब भवसुख की वांछा कैसे रह सकती है ? 'भवसुख' वास्तव में सुख नहीं; किन्तु दु:ख ही है। भव कहने से उसमें संसार की चारों गतियाँ आ गईं, स्वर्ग भी उसमें आ गया; अत: धर्मी जीव देवगति के सुख को भी नहीं चाहता। सम्यग्दृष्टि का ऐसा नि:कांक्षित अंग है। इसप्रकार सम्यग्दृष्टि के आठ गुणों में से दूसरे गुण का वर्णन किया। इस नि:कांक्षित अंग के पालन में सती अनंतमती का उदाहरण प्रसिद्ध है, जो आप 'सम्यक्त्व कथा' में पढ़ सकेंगे।

३. निर्विचिकित्सा अंग का वर्णन

आत्मा और शरीर को भिन्न जानने वाले सम्यग्दृष्टि जीव, देहादि को अशुचि देखकर आत्म-धर्म के प्रति ग्लानि नहीं करता; किसी मुनि आदि धर्मात्मा का शरीर मलिन या रोग युक्त देखकर उसे उनके प्रति घृणा-ग्लानि नहीं होती; परन्तु शरीर

मलिन होने पर भी अंतर में आत्मा तो पवित्र चैतन्यधर्मों से शोभित हो रहा है, उसका उसे बहुमान आता है। 'ऐसे मलिन कोढ़ी शरीर वाले को कैसे धर्म होता है ?' ऐसी दुगुंधा का भाव उसे नहीं आता। यह सम्यग्दृष्टि का निर्विचिकित्सा अंग है।

सर्वज्ञ के देह में तो अशुचि होती ही नहीं, उन्हें रोगादि भी नहीं होते। साधक-धर्मात्मा-मुनि वगैरह के देह में मलिनता हो, रोगादि हो, कभी कोढ़ भी हो जाये, शरीर सड़ जाये तो उसे देखकर धर्मी विचार करते हैं कि अहो, यह आत्मा तो अन्तर में सम्यग्दर्शनादि अपूर्व रत्नों से अलंकृत है, देह के प्रति उन्हें कोई ममत्वबुद्धि नहीं है, रोगादि तो देह में होते हैं और देह तो स्वभाव से ही अशुचिरूप है; इसप्रकार देह और आत्मा के भिन्न-भिन्न धर्मों का विचार करके धर्मी जीव देह को मलिन देख करके भी धर्मात्मा के गुणों के प्रति ग्लानि नहीं करते। शरीर में भी रागादि मलिनता हो जाये तो उससे वे अपने धर्मों से नहीं डिगते और उसमें शंका भी नहीं करते। मुनि तो देह के प्रति अत्यन्त उदासीन होते हैं, वे स्नानादि भी नहीं करते, देह की शोभा का उन्हें लक्ष्य नहीं है, वे तो स्वानुभूतिरूप स्नान के द्वारा आत्मा को निर्मल करने वाले हैं, रत्नत्रय ही उनका शृंगार है। अहो! ऐसे मुनिराज को देखकर रत्नत्रयधर्म के बहुमान से उनके चरणों में सिर झुक जाता है। **(क्रमश:)**

वीतराग-विज्ञान के स्वामित्व का विवरण (फार्म 4 नियम नं. 8)

समाचार पत्र का नाम	:	वीतराग-विज्ञान (हिन्दी)
प्रकाशन स्थान	:	श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.)
प्रकाशन अवधि	:	मासिक
प्रकाशक एवं मुद्रक	:	ब्र. यशपाल जैन (भारतीय) द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम.आई.रोड, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।
सम्पादक का नाम	:	डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल (भारतीय) श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)
स्वामित्व	:	पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15

मैं ब्र. यशपाल जैन एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकृत जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं। ह्न प्रकाशक : **ब्र. यशपाल जैन**

दिनांक 26-3-2013 ट्रस्टी, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

नियमसार प्रवचन -

जीव का स्वरूप कैसा है ?

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 45-46वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है -

वण्णरसगंधफासा थीपुंसणउंसयादिपज्जाया।
संठाणा संहणणा सव्वे जीवस्स णो संति।।४५।।
अरसमरूवमगंधं अव्वत्तं चेदणागुणमसद्दं।
जाण अलिंगग्गहणं जीवमणिद्दिट्ठसंठाणं।।४६।।

(हरिगीत)

स्पर्श रस गंध वर्ण एवं संहनन संस्थान भी।
नर, नारि एवं नपुंसक लिंग जीव के होते नहीं।।४५।।
चैतन्यगुणमय आतमा अव्यक्त अरस अरूप है।
जानो अलिंगग्रहण इसे यह अर्निदिष्ट अशब्द है।।४६।।

वर्ण-रस-गंध-स्पर्श, स्त्री-पुरुष-नपुंसकादि पर्यायें, संस्थान और संहनन- ये सब जीव को नहीं है।

जीव को अरस, अरूप, अगंध, अव्यक्त, चेतनागुणवाला, अशब्द, अलिंगग्रहण (लिंग से अग्राह्य) और जिसे कोई संस्थान नहीं कहा है ऐसा जानो।

(गतांक से आगे ...)

पर्यायदृष्टि से आत्मा के तीन प्रकार हैं (१) कर्मफलचेतना (२) कार्यसहित कर्मफलचेतना (३) कार्यशुद्धज्ञानचेतना।

(१) शुद्धस्वभाव से देखा जावे तो कारणपरमात्मा में शुद्धज्ञानचेतना तथा ज्ञान का आनन्द अपने स्वभाव के साथ अनादि-अनन्त है। ऐसा ज्ञान और आनन्द तो सभी जीवों में है; किन्तु ऐसा जिसको भान नहीं ऐसे एकेन्द्रिय जीव अपनी ज्ञानचेतना की पर्याय को विकार के फल में रोके हुए हैं इसलिए उनको कर्मफलचेतना है।

(२) दो इन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के जीव जिनको शुद्धस्वभाव का भान नहीं

है, वे पर के तथा विकार के करने रूपी कार्यसहित हर्ष-शोक के वेदन में रुके हैं, उन्हें कार्यसहित कर्मफलचेतना है।

(३) कार्यसमयसाररूप केवली तथा सिद्ध भगवान को अपने शुद्धात्मा के अवलम्बन से परिपूर्ण शुद्धता प्रगट हुई होने से शुद्धज्ञानचेतना है; उन्हें कर्मचेतना अथवा कर्मफलचेतना होती नहीं। यह चेतना प्रगटरूप शुद्ध अवस्था है।

इसतरह तीन प्रकार के आत्मा पर्यायदृष्टि से कहे हैं। फिर एक ही आत्मा में भी वे तीनों प्रकार हो सकते हैं। जब जीव एकेन्द्रिय था तब वह हर्ष-शोक के अनुभव में रुका था, जब वही जीव त्रस हुआ तब कार्यसहित हर्ष-शोक का अनुभव करने लगा, तथा वही जीव अपने आत्मा की श्रद्धा, ज्ञान, लीनता करके केवलज्ञान प्रगट करे तब अकेला ज्ञान रह गया उस समय शुद्धज्ञानचेतना प्रगटरूप हो गई।

कर्मचेतना, कर्मफलचेतना और प्रगटरूप शुद्धज्ञानचेतना, यह तीनों ही व्यवहारनय के विषय हैं। अनादि-अनन्त (कारण) शुद्धज्ञानचेतना निश्चयनय का विषय है।

केवली भगवान को तथा सिद्धों को सादि-अनन्तकाल रहनेवाली शुद्धज्ञानचेतना प्रगट हुई है वह व्यवहारनय का विषय है। वह विषय जानने योग्य तो है किन्तु अवलम्बन करने योग्य नहीं है। कारणपरमात्मा के शुद्धज्ञानचेतना है और आनन्द फलरूप चेतना है। यह दोनों चेतना अनादि-अनन्त हैं तथा निगोद से लेकर सिद्धों तक समस्त जीवों के हैं। उत्पाद-व्यय-रहित ध्रुवसामान्य के साथ विशेष पर्याय अनादि-अनन्त एकरूप रहती है। आत्मा ज्ञान आनन्द की ध्रुवशक्ति से भरपूर है। उसके साथ उसकी विशेष जो ज्ञानचेतना तथा ज्ञान के फलरूप आनन्द चेतना है वह अनादि अनन्त है। इसप्रकार सामान्य और विशेष होकर वह सम्पूर्ण कारणपरमात्मा पूरा होता है और वही निश्चयनय का विषय है। वही रत्नत्रय और केवलज्ञान प्रगट होने का कारण है।

सिद्धों और केवलियों के ज्ञानचेतना सादि-अनन्त है तथा सभी जीवों (कारण-परमात्मा) को शुद्धज्ञानचेतना अनादि अनन्त है।

कार्यपरमात्मा और कारणपरमात्मा को शुद्धज्ञानचेतना होती है। सिद्ध और

केवली कार्यपरमात्मा है ह्न उन्हें केवलज्ञानादि पर्यायें प्रगट हुई हैं, वे सादि-अनन्त काल रहेंगी। भगवान मोक्ष पधारे और गौतम स्वामी को केवलज्ञान प्रगट हुआ वह कार्य कहलाता है और वे कार्यपरमात्मा हैं। साधक को आंशिक शुद्धज्ञानचेतना प्रगटी है, परन्तु उसे गौण रखा है और पूर्ण शुद्धपर्याय प्रगट होनेवाले कार्यपरमात्मा को यहाँ लिया है। निगोद से लेकर सिद्ध तक के सभी जीव कारणपरमात्मा हैं, उनके शुद्धज्ञानचेतना अनादि-अनन्त हैं, उसमें कर्म के निमित्त की अथवा अशुद्धता की अपेक्षा नहीं है। उसके ही अवलम्बन से सम्यग्दर्शन, चारित्र, शुक्लध्यान और केवलज्ञान प्रगट होता है।

सिद्धों तथा केवलियों के ज्ञान परिपूर्ण प्रगट हैं, इसलिए उसके फलरूप में परिपूर्ण आनन्द प्रगट हो गया है; इसीलिए कार्यसमयसार और कारणसमयसार को सहज फलरूप शुद्धज्ञानचेतना होती है।

यहाँ 'इसीलिये' शब्द पर विशेष भार दिया है। कार्यपरमात्मा तथा कारणपरमात्मा के शुद्धज्ञानचेतना होती है, इसीलिये उनके सहज फलरूप शुद्धज्ञानचेतना होती है। एकेन्द्रिय तथा त्रस जीव के हर्ष-शोक का वेदन है, इसलिये उन्हें आनन्द चेतनारूपी फल नहीं है। त्रस जीवों को दया-दानादि की वृत्ति उठती है, वह उन्हें विकार की एकाग्रता का वेदन है, अतः उन्हें शुद्धज्ञानचेतना कार्यरूप नहीं है और फलरूप आनन्द का वेदन नहीं है।

जो आत्मा अपनी त्रिकाली शक्ति के अवलम्बन से शुद्धचेतना को कार्यरूप में प्रगट करता है उसको आनन्द का फल होता है। केवली तथा सिद्धों को आनन्दचेतना प्रगटी है, उसका अनुभव है। चेतना अर्थात् एकाग्र होना, अनुभव करना; अपने ज्ञानस्वभाव में एकाग्र हुए वे ही निराकुल आनन्द का अनुभव करते हैं, उन्हीं को कार्यसमयसार कहो, कार्यशुद्धजीव कहो, व्यक्त शुद्धपर्याय कहो, वह सब एक ही है।

(क्रमशः)

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : अपने ही सत् का ज्ञान करना क्यों महत्वपूर्ण है, पर-सत् का क्यों नहीं?

उत्तर : अपनी अपेक्षा से अन्य सभी परद्रव्य असत् हैं, स्वयं ही सत् है। स्वयं ही अपना ज्ञाता, ज्ञेय और ज्ञानरूप सत् है; अतः अपने ही सत् का ज्ञान करना। अपने सत् का ज्ञान करने से अतीन्द्रिय आनन्द की झलक आये बिना नहीं रहेगी यदि आनन्द न आवे तो समझ लो कि हमने अपने सत् का सच्चा ज्ञान किया ही नहीं। मूल में तो अन्तर में झुकना - रमणता करना ही सर्व सिद्धांत का सार है।

प्रश्न : क्या खण्ड-खण्ड ज्ञान - इन्द्रियज्ञान भी संयोगरूप है ?

उत्तर : हाँ, वास्तव में तो खण्ड-खण्ड ज्ञान भी त्रिकालीस्वभाव की अपेक्षा से संयोगरूप है। जिसप्रकार शरीर, ज्ञायक से अत्यन्त भिन्न है; उसीप्रकार खण्ड-खण्ड ज्ञान - इन्द्रियज्ञान भी ज्ञायक से भिन्न है, संयोगरूप है; स्वभावरूप नहीं।

प्रश्न : क्या ज्ञानी की प्ररूपणा में असत् की प्ररूपणा भी आती है ?

उत्तर : नहीं, ज्ञानी की वाणी में असत् की प्ररूपणा नहीं आती। ज्ञानी के अस्थिरता तो होती है; किन्तु उसकी प्ररूपणा में असत् कथन नहीं आता। व्यवहार से निश्चय होता है, राग से लाभ होता है अथवा राग से धर्म होता है, एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कार्य कर सकता है - ऐसी प्ररूपणा को असत् प्ररूपणा कहते हैं।

प्रश्न : पंचास्तिकाय को अर्थी होकर सुने - इसका क्या अर्थ है ?

उत्तर : अर्थी होकर अर्थात् सेवक होकर, दास होकर सुनना। जैसे किसी बड़े आदमी के पास याचक होकर मांगा जाता है; उसीप्रकार गुरु के पास पात्र शिष्य याचक होकर सुनता है। मैं भी कुछ जानता हूँ - इसप्रकार अभिमानपूर्वक नहीं सुनता, किन्तु गरजमन्द होकर अपना हित करने के लिए सुनता है। अपने ज्ञान में पंचास्तिकाय को जानता है - निर्णय करता है।

प्रश्न : परसत्तावलम्बी ज्ञान शुद्धात्मा का निर्णय करता है, क्या वह ज्ञान भी व्यर्थ है ?

उत्तर : परोन्मुख ज्ञान से सविकल्प निर्णय होता है, वह वास्तव में शुद्धात्मा का

निर्णय नहीं कहा जाता। स्वसन्मुख होकर निर्विकल्पता में जो निर्णय होता है, वही शुद्धात्मा का सच्चा निर्णय है।

प्रश्न : जो सविकल्प ज्ञान किनारे तक ले जाता है, उसको व्यर्थ क्यों कहा जाता है ?

उत्तर : सविकल्प ज्ञान से शुद्धात्मा का अनुभव नहीं होता। स्व-सन्मुख ज्ञान से शुद्धात्मा का स्वानुभवपूर्वक निर्णय होता है।

प्रश्न : व्यवस्थित जानना ज्ञान का स्वभाव है क्या ?

उत्तर : आत्मा ज्ञानस्वरूप है और उसकी केवलज्ञानादि पाँच पर्यायें हैं। केवलज्ञान अपने गुण के व्यवस्थित कार्य को जानता है। उसी प्रकार मतिज्ञान भी अपने गुण के व्यवस्थित कार्य को जानता है, पर के कार्य को भी व्यवस्थित जानता है। श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन:पर्ययज्ञान भी अपने-अपने गुण के व्यवस्थित कार्य को तथा पर के कार्य को भी व्यवस्थित जानते हैं। व्यवस्थित जानना उनका स्वभाव है।

आत्मा अकेला ज्ञानस्वरूप है अर्थात् उसकी पर्याय, गुण और द्रव्य - मात्र ज्ञाता ही हैं, फेरफार करने वाले नहीं। अपने में भी कोई फेरफार करना नहीं है। जैसा व्यवस्थित कार्य होता है, वैसा जानता है। अहाहा ! देखो तो सही ! वस्तु ही ऐसी है। अन्दर में तो खूब गम्भीरता से चलता है, परन्तु कथन में तो .....।

प्रश्न : वर्तमान पर्याय में अधूरा ज्ञान है, उस अधूरे ज्ञान में पूरे ज्ञानस्वभाव का ज्ञान कैसे हो ?

उत्तर : जैसे आँख छोटी होने पर भी सारे शरीर को जान लेती है, उसीप्रकार पर्याय में ज्ञान का विकास अल्प होने पर भी यदि वह ज्ञान स्व-सन्मुख हो तो पूर्णज्ञानस्वरूपी शुद्धात्मा को स्वसंवेदन से जान लेता है। केवलज्ञान होने से पहले अपूर्णज्ञान में भी स्वसंवेदन प्रत्यक्ष से पूर्णज्ञानस्वरूपी आत्मा का नि:संदेह निर्णय होता है।

जैसे शक्कर की अल्पमात्रा से सम्पूर्ण शक्कर के स्वाद का निर्णय हो जाता है, वैसे ही ज्ञान की अल्पपर्याय को अन्तर्मुख करने पर उसमें पूर्णज्ञानस्वभाव का निर्णय हो जाता है। पूर्णज्ञान होने पर ही पूर्ण आत्मा को जाना जाय - ऐसी बात नहीं है। यदि अपूर्णज्ञान पूर्ण आत्मा को न जान सके, तो कभी भी सम्यग्ज्ञान ही नहीं हो सके; इसलिए अपूर्णज्ञान भी स्वसन्मुख होकर पूर्ण आत्मा को जान लेता है।

समाचार दर्शन -

श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में -

ताजा हुई पंचकल्याणक की मधुर स्मृतियाँ

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में दिनांक 22 से 24 फरवरी, 2013 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का प्रथम वार्षिकोत्सव अनेक मांगलिक आयोजनों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ। विगत वर्ष 21 से 27 फरवरी 2012 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित जिनालय का जयपुर में सम्पन्न ऐतिहासिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की स्मृति में आयोजित तीन दिवसीय प्रथम वार्षिकोत्सव में उपस्थित लोगों को ऐसा लगा मानो पंचकल्याणक दुबारा हो रहा हो।

इस अवसर पर दिनांक 22 फरवरी को प्रात: पंचपरमेष्ठी विधान के उपरान्त उद्घाटन सभा को अत्यन्त संक्षेप में पूर्ण कर **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** द्वारा ग्रन्थाधिराज समयसार पर मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला।

डॉ. भारिल्ल के प्रवचन के पश्चात् दिल्ली से पधारे डॉ. वीरसागरजी द्वारा 'वक्ता का स्वरूप' विषय पर मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला।

सामान्यत: जब भी कार्यक्रम होते हैं, तब एक दिन उद्घाटन एवं एक दिन समापन समारोह की सभा में चला जाता है, अत: इस बार कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में अभिनव प्रयोग करते हुए माल्यार्पण आदि औपचारिक कार्यों में समय व्यर्थ न गंवाते हुए इनके बिना ही सीधे डॉ. भारिल्ल का प्रवचन हुआ, जिससे उपस्थित जनसमुदाय को अधिकतम जिनवाणी सुनने का अवसर मिला। इस अभिनव प्रयोग की सभी ने सराहना करते हुए इसे आगे भी चालू रखने का सुझाव दिया।

इस महोत्सव में गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन, आत्मार्थी विद्वानों द्वारा प्रवचन, पंचपरमेष्ठी विधान, जन्मकल्याणक की राजसभा, तपकल्याणक की इन्द्रसभा, टोडरमल महाविद्यालय के वर्तमान विद्यार्थियों द्वारा देव-शास्त्र-गुरु एवं स्नातक विद्वानों द्वारा निमित्त-उपादान विषय पर गोष्ठी, जिनेन्द्र भक्ति आदि अनेक कार्यक्रम विशिष्ट आकर्षण का केन्द्र रहे।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर द्वारा संपन्न हुये।

इन्द्रसभा व राजसभा में बही तत्त्वज्ञान की गंगा और जीवंत हो गई पंचकल्याणक की स्मृतियाँ -

दिनांक 22 फरवरी की रात्रि में जन्मकल्याणक की राज सभा का आयोजन किया गया। राजसभा में भगवान के माता-पिता के रूप में श्री शान्तिलाल-श्रीमती सुशीला देवी जैन जयपुर, यज्ञनायक श्री राजेन्द्र-प्रमिला दोशी मुम्बई, महामंत्री श्री विपिन-अध्यात्मप्रभा जैन मुम्बई के साथ-साथ अन्य राजा-रानी के रूप में श्री नरेश-ज्योति जैन श्योपुर, श्री नरेन्द्र-

कल्पना बड़जात्या जयपुर, श्री समकित-सुहानी पहाड़िया किशनगढ, श्री के.एल.जैन-शकुन्तला जैन जयपुर आदि राजागण मंचासीन थे।

दिनांक 23 फरवरी की रात्रि में आयोजित तपकल्याणक की इन्द्र सभा में सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी के रूप में श्री अशोक जैन-श्रीमती किरण जैन इन्दौर के साथ इन्द्रसभा के अन्य सभासदों के रूप में श्री अरिहंत-दिव्या चौधरी किशनगढ, श्री अजित-शशि तोतुका जयपुर, श्री आशीष-स्वानुभूति जैन मुम्बई, श्री निहालचन्द-अचरजदेवी जैन जयपुर आदि इन्द्रगण मंचासीन थे।

कार्यक्रम में राजसभा एवं इन्द्रसभा के सभी सदस्यगणों ने तत्त्वचर्चा के माध्यम से वातावरण को तत्त्वज्ञानमय बना दिया, जिसकी सभी साधर्मियों ने बहुत प्रशंसा एवं सराहना की।

सभा का संचालन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर ने किया। पण्डित अनिलजी धवल भोपाल, पण्डित विवेकजी शास्त्री दलपतपुर, श्री अकलंक जैन फिरोजाबाद इत्यादि विद्वानों के प्रासंगिक भक्ति गीतों ने सभा को मधुरता प्रदान की।

धूमधाम से निकली विशाल शोभायात्रा –

कार्यक्रम के अंतिम दिन दिनांक 24 फरवरी को जिनेन्द्र भगवान की विशाल शोभायात्रा का भव्य आयोजन किया गया। श्री टोडरमल स्मारक भवन से प्रारंभ हुई इस विशाल शोभायात्रा में जिनेन्द्र भगवान को लेकर श्री अजितप्रसादजी दिल्ली रथ पर बैठे एवं श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ ने रथ के सारथी का पद ग्रहण किया। इस शोभायात्रा में जिनेन्द्र भगवान के रथ के अतिरिक्त सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी, सभी इन्द्रगण, महाराजा नाभिराय एवं मरुदेवी अपने राजा-रानी के साथ चल रहे थे। श्री टोडरमल स्मारक, बापूनगर समन्वय, मालवीय नगर सेक्टर-3 इत्यादि अनेक महिला मण्डलों की सदस्यायें अपने-अपने मण्डल की ड्रेस में पंचपरमागमों को सिर पर धारण कर गाजती-बाजती शोभायात्रा में उत्साह और भक्ति का अपूर्व वातावरण बना रही थी। महाविद्यालय के सैकड़ों वर्तमान एवं भूतपूर्व स्नातक विद्वान, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, जयपुर महानगर के सभी युवा सदस्यों के साथ-साथ सैकड़ों की संख्या में साधर्मी पुरुष भाई अपने धवल वस्त्रों में केसरिया दुपट्टा डालकर अध्यात्म और भक्ति से सराबोर भजनों पर झूमते हुए चल रहे थे।

शोभायात्रा के मार्ग में पड़ने वाले सभी जैन परिवारों द्वारा श्रीजी का स्वागत मंगल स्वस्तिक चिह्न बनाकर एवं श्रीजी को अर्घ्य समर्पित कर किया गया।

यह शोभायात्रा श्री टोडरमल स्मारक भवन से राजेन्द्र मार्ग, सावित्री पथ, पार्श्वनाथ चैत्यालय होती हुई श्री टोडरमल स्मारक भवन पहुँची। शोभायात्रा में श्री सुरेशकुमारजी जैन शिवपुरी धर्मध्वजा लेकर सबसे आगे चल रहे थे।

श्रद्धा और भक्ति के उल्लासपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ महामस्तकाभिषेक –

दिनांक 24 फरवरी को सीमंधर जिनालय एवं पंचतीर्थ जिनालय में विराजमान सभी जिनबिम्बों के महामस्तकाभिषेक का आयोजन किया गया। सीमंधर भगवान का प्रथम अभिषेक

का सौभाग्य श्री सुशील कुमारजी गोदीका परिवार ने एवं विश्व की सबसे बड़ी स्फटिक रत्न की चन्द्रप्रभ भगवान की प्रतिमा का प्रथम अभिषेक श्री अजितप्रसादजी परिवार दिल्ली ने किया।

पंचतीर्थ जिनालय में श्री अशोकजी जैन (अरिहंत केपिटल) इन्दौर द्वारा भगवान महावीर का, श्री जगनमलजी सेठी परिवार जयपुर द्वारा भगवान आदिनाथ, श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी परिवार किशनगढ द्वारा श्री शान्तिनाथ भगवान, श्री दिलीपभाई शाह परिवार मुम्बई द्वारा श्री बाहुबली भगवान एवं श्री सुरेशचंदजी जैन शिवपुरी परिवार द्वारा श्री पार्श्वनाथ भगवान का सर्वप्रथम अभिषेक किया गया। इसके अतिरिक्त श्री विनोदजी जैन जयपुर द्वारा पद्मासन सीमंधर भगवान, श्री राजेन्द्रजी दोशी मुम्बई द्वारा युगमन्धर भगवान, श्री संजयजी कोठारी मुम्बई द्वारा बाहु भगवान एवं श्री प्रेमचन्दजी बजाज परिवार कोटा द्वारा सुबाहु भगवान का प्रथम अभिषेक किया गया।

तत्पश्चात् चतुर्मुख प्रतिमाओं के अन्तर्गत वासुपूज्य भगवान का प्रथम अभिषेक पण्डित शिखरचंदजी जैन विदिशा, श्री समकितजी पहाड़िया, श्री आशीषजी जैन मुम्बई व श्री विद्याप्रकाश संजय जैन सूरत की ओर से श्री जितेन्द्र उत्सव बाकलीवाल परिवार जयपुर ने एवं नेमिनाथ भगवान का प्रथम अभिषेक श्री पवनजी बज जयपुर, श्री आलोकजी जैन जयपुर, श्री शान्तिलालजी चौधरी भीलवाड़ा व श्री नरेन्द्रजी बड़जात्या जयपुर द्वारा किया गया।

गोष्ठियाँ सानंद संपन्न –

पंचकल्याणक की स्मृति-स्वरूप आयोजित वार्षिकोत्सव के अन्तर्गत देव-शास्त्र-गुरु एवं निमित्तोपादान विषयों पर गोष्ठियों का आयोजन किया गया।

(1) दिनांक 22 फरवरी को दोपहर में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के वर्तमान विद्यार्थियों द्वारा 'देव-शास्त्र-गुरु' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी के अध्यक्ष पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल (प्राचार्य-श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय), मुख्य अतिथि श्री महेन्द्रजी चौधरी भोपाल एवं विशिष्ट अतिथि पण्डित शिखरचंदजी विदिशा मंचासीन थे।

इस गोष्ठी में मयंक ठगन द्वारा **पूजन किसकी व क्यों ?**, ऋषभ जैन द्वारा **देव का सामान्य स्वरूप,** अच्युतकान्त जैन द्वारा **शास्त्र का सामान्य स्वरूप,** हर्षित जैन द्वारा **गुरु का सामान्य स्वरूप,** कुलभूषण अम्बेकर द्वारा **देव-भक्ति का अन्यथा रूप,** साकेत जैन द्वारा **गुरु-भक्ति का अन्यथा रूप,** जिनकुमार जैन द्वारा **शास्त्र-भक्ति का अन्यथा रूप,** गोमटेश्वर चौगुले द्वारा **कुगुरु-कुदेव-कुशास्त्र के श्रद्धान का निषेध,** जीवेश जैन द्वारा **मोक्षमार्ग में देवादिक की अनिवार्यता,** जिनेश सेठ द्वारा **विभिन्न पूजनों में वर्णित देव-शास्त्र-गुरु,** कु. अनुभूति जैन द्वारा **देव-शास्त्र-गुरु से प्रयोजन सिद्धि,** विवेक जैन द्वारा **क्या वर्तमान में देवादिक की आराधना संभव** विषय पर अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

गोष्ठी का मंगलाचरण मयंक जैन अमरमऊ ने एवं संचालन अभिषेक जैन चिनौआ व नवीन जैन उज्जैन ने किया।

(2) द्वितीय गोष्ठी दिनांक 23 फरवरी को दोपहर में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक विद्वानों द्वारा 'निमित्तोपादान' विषय पर आयोजित की गई।

गोष्ठी के अध्यक्ष तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं मुख्य अतिथि श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ व श्री निहालचंदजी जैन जयपुर थे।

इस गोष्ठी में डॉ. भागचन्दजी जैन जयपुर द्वारा **निमित्त का स्वरूप एवं भेद-प्रभेद,** पण्डित राहुलजी शास्त्री नौगांव द्वारा **उपादान का स्वरूप एवं भेद-प्रभेद,** डॉ. दीपकजी जैन जयपुर द्वारा **निमित्तोपादान की अवधारणा और आध्यात्मिकसत्पुरुष कानजीस्वामी,** डॉ. अरुणजी बण्ड अलवर द्वारा **कार्यकारण व्यवस्था-जैनदर्शन के परिप्रेक्ष्य में,** डॉ. संजयजी जैन दौसा द्वारा **कार्यकारण व्यवस्था और निमित्तोपादान,** पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा **निमित्तोपादान नयों के दृष्टिकोण से,** पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा **षट्कारक-पंचसमवाय एवं निमित्तोपादान में समन्वय,** डॉ. श्रीयांसजी सिंघई जयपुर द्वारा **पंचलब्धि और निमित्तोपादान,** पण्डित विनोदजी शास्त्री 'चिन्मय' द्वारा **कार्य की उत्पत्ति का नियामक कारण कौन ?** विषय पर अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

मंगलाचरण विवेक जैन दलपतपुर ने एवं संचालन पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने किया।

ब्र. यशपालजी द्वारा धर्मप्रभावना

नागपुर (महा.) : यहाँ मुमुक्षु मण्डल के विशेष आग्रह पर ब्र. यशपालजी जैन दिनांक 7 से 18 मार्च तक पधारे। आपके द्वारा कर्म सिद्धांत को समझने के लिए आवश्य विषय दशकरण पर दोनों समय व्याख्यानात्मक कक्षायें ली गई। करणानुयोग जैसा कठिन विषय होते हुए भी 80-90 श्रोताओं की प्रतिदिन उपस्थिति रहती थी।

अंतिम दिन आयोजित समापन समारोह में अनेक श्रोताओं ने दशकरण विषय पर अपने जो विचार रखे उससे स्पष्ट हुआ कि सभी ने विषय गहराई से ग्रहण किया है। फलस्वरूप 'जीव जीता - कर्म हारा' नामक पुस्तक की 50 प्रतियाँ जयपुर से मंगवाकर श्रोताओं ने अपने परिचितों को वितरित की।

कक्षाओं में प्रतिदिन ब्र.अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित मनीषजी सिद्धांत नागपुर, पण्डित आदेशजी शास्त्री आदि विद्वान भी उपस्थित रहते थे।

इस विषय की कक्षाओं की सफलता को देखते हुए आगामी नवम्बर माह में इस विषय पर एक संगोष्ठी अलवर (राज.) में आयोजित करने का निर्णय लिया गया है, जिसमें देश के करणानुयोग के विशेषज्ञ अनेक विद्वानों को आमंत्रित किया जायेगा।

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की ह्न

साहित्यिक व सांस्कृतिक प्रतियोगिताऐं सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल महाविद्यालय में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु महाविद्यालय द्वारा दिनाँक 12 से 24 फरवरी तक विभिन्न साहित्यिक प्रतियोगितायें सम्पन्न कराई गयी। दिनांक 12 फरवरी को रात्रि में प्रवचनोपरान्त श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई के करकमलों द्वारा प्रतियोगिताओं का उद्घाटन किया गया।

दिनांक 13 फरवरी को **संस्कृत संभाषण प्रतियोगिता** में जिनेश सेठ ने प्रथम एवं पवन जैन व ऋषभ जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। निर्णायक डॉ. योगेन्द्र शर्मा व पण्डित शांतिकुमारजी पाटील थे। दिनांक 14 फरवरी को **शास्त्री वर्ग की तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता** में साकेत जैन ने प्रथम, विवक जैन भिण्ड ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। निर्णायक के रूप में डॉ. नीतेशजी शाह व पण्डित मनीषजी कहान उपस्थित थे। 15 फरवरी को प्रात: **उपाध्याय वर्ग की तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता में** अच्युतकांत जैन ने प्रथम एवं जिनेन्द्र जैन व चर्चित जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। निर्णायक पण्डित सोनूजी शास्त्री एवं डॉ.आनन्दजी जैन थे। रात्रि में **अंत्याक्षरी प्रतियोगिता** के अन्तर्गत अभिषेक जैन व अनुज जैन प्रथम तथा साकेत जैन व शुभम जैन, सौरभ जैन व प्रीयम जैन तथा अच्युतकांत जैन व जिनेन्द्र जैन द्वितीय स्थान पर रहे। निर्णायक श्रीमती समता जैन, पण्डित रजित शास्त्री एवं पण्डित सोनूजी शास्त्री थे। दिनांक 16 फरवरी को प्रात: **श्लोकपाठ प्रतियोगिता** में जिनेश सेठ प्रथम व साकेत जैन द्वितीय स्थान पर रहे। निर्णायक के रूप में पण्डित शांतिकुमार पाटील एवं श्री संदीपजी छाबड़ा उपस्थित थे। रात्रि में **भजन प्रतियोगिता** में गोम्मटेश चौगुले व विजय जैन ने प्रथम व रिमांशु जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। निर्णायक श्री प्रकाशचंदजी जैन व कु. परिणति पाटील थे। दिनांक 19 फरवरी को रात्रि में **भाषण प्रतियोगिता (उपाध्याय वर्ग)** के अन्तर्गत चर्चित जैन ने प्रथम स्थान एवं अमित जैन व अच्युतकांत जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। निर्णायक के रूप में पण्डित संजीवजी खड़ेरी व पण्डित गजेन्द्रजी जैन थे। 20 फरवरी को रात्रि में **भाषण प्रतियोगिता (शास्त्री वर्ग)** में विवेक जैन भिण्ड व सचिन सागर ने प्रथम स्थान एवं साकेत जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। निर्णायक के रूप में पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल व पण्डित पीयूषजी जैन थे। दिनांक 21 फरवरी को रात्रि में **काव्यपाठ प्रतियोगिता** में विशाल जैन ने प्रथम एवं सचिन जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। निर्णायक डॉ. भागचंदजी जैन एवं पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री थे। 24 फरवरी को रात्रि में **अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता** में प्रथम विवेक जैन भिण्ड व जिनेश सेठ एवं द्वितीय ऋषभ जैन रहे। निर्णायक के रूप में श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं श्रीमती गुन्जा पाटनी उपस्थित थे।

दिसम्बर 2012 में कबड्डी, खो-खो, बैडमिंटन, कैरम, शतरंज आदि प्रतियोगिताओं का भी आयोजन हुआ। सभी प्रतियोगिताओं का संयोजन एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष ने किया।

क्या आप चाहते हैं ?

● आपके बालकों का जीवन जैन तत्त्वज्ञान के संस्कारों से सुशोभित हो।

● वे जैन तत्त्वज्ञान के ठोस विद्वान बनें। ● वे स्वपर के कल्याण में अपना जीवन लगायें।

यदि हाँ तो शीघ्रता करें,

अपने बालकों को जैनदर्शन शास्त्री कराने हेतु श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर में प्रवेश दिलायें।

इस विद्यालय में –

● दसवीं कक्षा में प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण मात्र 50 छात्रों को उपाध्याय कनिष्ठ (11वीं कक्षा) में प्रवेश दिया जायेगा। ● छात्र यहाँ 5 वर्ष तक रहकर राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय से जैनदर्शन शास्त्री (स्नातक के समकक्ष) की डिग्री प्राप्त करते हैं, जो पूरे देश में मान्य है। ● छात्रों की आवास/भोजन/शिक्षा/स्वास्थ्य की सभी उच्चस्तरीय सुविधायें संस्था द्वारा नि:शुल्क उपलब्ध करायी जाती हैं।

प्रवेशार्थी छात्रों को –

21 मई से 7 जून 2013 तक देवलाली-नासिक (महा.) में आयोजित प्रशिक्षण शिविर में रहना अनिवार्य है। महाविद्यालय में प्रवेश हेतु छात्रों का चयन इसी शिविर में होता है।

विशेष जानकारी एवं प्रवेश आवेदन पत्र प्राप्त करने हेतु संपर्क करें-

पण्डित रतनचंद भारिल्ल	पण्डित शान्तिकुमार पाटील	पण्डित सोनू शास्त्री
प्राचार्य	उपप्राचार्य	अधीक्षक

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015

फोन-0141-2705581 मो. 9785643277 (सोनू शास्त्री) ptstjaipur@yahoo.com

हार्दिक बधाई

1. अलीगढ-एटा (उ.प्र.) निवासी मुकेश चन्द्र जैन की सुपुत्री सौ.का. पल्लवी जैन का शुभ विवाह कायमगंज निवासी श्री योगेश कुमार जैन के सुपुत्र चि. प्रतीक जैन के साथ दिनांक 31 जनवरी 2013 को संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु 251/- रुपये प्राप्त हुये।

2. पिड़ावा (राज.) निवासी चि. विवेक जैन शास्त्री का शुभ विवाह सौ. प्रज्ञा जैन के साथ संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु 100/- रुपये प्राप्त हुये।

3. चेन्नई निवासी पण्डित जम्बूकुमार जैन एवं श्रीमती रेवती जैन की सुपुत्री सौ.कां. मनीषा जैन का शुभ विवाह श्री आदिनाथ के सुपुत्र चि. बालाजी जैन के साथ दिनांक 7 फरवरी को संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को 300/- रुपये प्राप्त हुये।

इस शुभ अवसर पर वीतराग-विज्ञान परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा संचालित एवं
पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली द्वारा आयोजित

47वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 21 मई 2013 से 7 जून 2013 तक

प्रतिवर्ष ग्रीष्मकाल में लगने वाला प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष दिनांक 21 मई से 7 जून 2013 तक देवलाली-नासिक (महा.) में आयोजित होने जा रहा है।

प्रशिक्षण शिविर में देवलाली पधारने हेतु आप सभी को हार्दिक आमंत्रण है।

विशिष्ट कार्यक्रम -

ध्वजारोहण एवं शिविर उद्घाटन समारोह –	21 मई,
अ.भा. जैन युवा फैडरेशन का अधिवेशन –	26 मई
टोडरमल स्नातक परिषद का महाराष्ट्र प्रान्तीय सम्मेलन –	1 जून
अ.भा. दि. जैन विद्वत्परिषद् द्वारा आयोजित विद्वत्संगोष्ठी –	2 जून
प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन –	6 जून
दीक्षान्त एवं समापन समारोह –	7 जून

हार्दिक अनुरोध :- 1. आपके यहाँ से कितने भाई-बहिन एवं प्रशिक्षणार्थी शिविर में पधार रहे हैं व कब से कब तक रहेंगे, इसकी पूर्व सूचना 1 मई तक जयपुर कार्यालय को अनिवार्य रूप से भिजवायें ताकि आपके आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था की जा सके। 2. श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय हेतु छात्रों का चयन इसी प्रशिक्षण शिविर में होता है; अत: महाविद्यालय में प्रवेश हेतु अधिक से अधिक छात्रों को प्रेरणा देकर शिविर में भिजवायें।

संपर्क सूत्र -

श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर,
जयपुर 302015 (राज.) फोन-0141-2705581, 2707458
Email-ptstjaipur@yahoo.com

देवलाली का पता – पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, कहान नगर, लाम रोड, देवलाली, नासिक-422401 (महा.) फोन नं. (0253) 2491044

शोक समाचार

1. इन्दौर (म.प्र.) राघौगढ निवासी श्री सुशीलकुमारजी जैन का 13 फरवरी को इन्दौर में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप साधना नगर मंदिर इन्दौर में नित्य स्वाध्याय सभा का संचालन करते थे तथा टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित गतिविधियों के सहयोगी थे।

2. दिल्ली निवासी डॉ. त्रिलोकचंदजी कोठारी का दिनांक 27 फरवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप प्रसिद्ध उद्योगपति होने के साथ-साथ विद्वान अध्येता भी थे। अहिंसा और शाकाहार के क्षेत्र में आपका विशेष योगदान उल्लेखनीय है। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित गतिविधियों में आपकी सदैव अनुमोदना एवं सहयोग रहता था।

3. जयपुर (राज.) निवासी श्री माणकचंदजी गोधा का दिनांक 27 फरवरी को 81 वर्ष की आयु में शांतपरिणामों पूर्वक देहावसान हो गया। आप बहुत सरल स्वभावी एवं स्वाध्याय प्रेमी थे। आप लगभग 30-35 वर्षों तक आरोग्य भारती संस्थान में नि:स्वार्थ भाव से सेवायें देते रहे। टोडरमल स्मारक में लगने वाले प्रत्येक शिविर में धर्मलाभ लिया करते थे। आपकी स्मृति में 1500/- रुपये जैनपथप्रदर्शक हेतु प्राप्त हुये।

4. पूना (महा.) निवासी श्री शेषमलजी प्रेमचंदजी जैन का दिनांक 20 फरवरी को 82 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप बहुत स्वाध्यायी थे। आप देवलाली शिविर में पधारकर स्वाध्याय का लाभ लिया करते थे। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 500/- रुपये प्राप्त हुये।

5. दिल्ली निवासी श्रीमती सुन्दरी देवी जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द जैन (हैटवाले) का दिनांक 12 फरवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

आप बहुत स्वाध्यायी थीं। श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में आपका अपना फ्लेट भी था, जिसमें महीनों तक रहकर आप महाविद्यालय की गतिविधियों का लाभ लिया करती थीं। आपकी स्मृति में 11 हजार रूपये टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु प्राप्त हुये हैं, एतदर्थ धन्यवाद।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत सुख को प्राप्त करें-यही मंगल भावना है।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

17 से 21 अप्रैल	देवलाली	गुरुदेव जयन्ती
22 से 27 अप्रैल	भोपाल (कोहेफिजा)	सिद्धचक्र विधान एवं महावीर जयन्ती
28 अप्रैल	भोपाल (मण्डीदीप)	मन्दिर शिलान्यास

आत्मार्थी छात्रों के लिए अपूर्व अवसर

आत्मार्थी छात्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सान्निध्य में रहकर चारों अनुयोगों के माध्यम से जैनधर्म का सैद्धान्तिक अध्ययन कर सकें तथा साथ ही संस्कृत, न्याय, व्याकरण आदि विषयों का आवश्यक ज्ञान प्राप्त करें ह्न इस महत्त्वपूर्ण उद्देश्य से जयपुर में विभिन्न ट्रस्टों के सहयोग से श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय चल रहा हैं, जिसमें पूरे देश के विभिन्न भागों से आये छात्र अध्ययन कर रहे हैं।

अबतक 620 छात्र शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करके शासकीय एवं अर्द्धशासकीय सेवाओं में रहकर विभिन्न स्थानों में तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं, जिनमें से 69 छात्र जैनदर्शनाचार्य की स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं। अनेक छात्र पी.एच.डी./नेट/जे.आर.एफ. आदि भी कर चुके हैं।

ज्ञातव्य है कि यहाँ प्रवेश पानेवाले छात्रों को जगद्गुरुरामानन्दाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय की जैनदर्शन (त्रिवर्षीय शास्त्री स्नातक) कोर्स की परीक्षायें दिलाई जाती हैं, जो बी.ए. के समकक्ष हैं तथा सरकार द्वारा आई. ए. एस., कैट, मैट, जे.आर.एफ. जैसी किसी भी सर्वमान्य प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये मान्यता प्राप्त हैं।

शास्त्री परीक्षा में प्रवेश के पूर्व छात्र को दो वर्ष का राजस्थान शिक्षा बोर्ड का उपाध्याय परीक्षा का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है, जो हायर सैकेण्ड्री (12वीं) के समकक्ष है। इसप्रकार कुल 5 वर्ष का पाठ्यक्रम है। इसके बाद यदि छात्र चाहें तो दो वर्ष का जैनदर्शनाचार्य का कोर्स भी कर सकते हैं, जो (एम.ए.) के समकक्ष है।

उपाध्याय में प्रवेश हेतु किसी भी प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सेकेण्डरी (दसवीं) परीक्षा विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान व अंग्रेजी सहित उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

यहाँ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, बाल ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन, पण्डित पीयूषजी शास्त्री एवं पण्डित सोनूजी शास्त्री के सान्निध्य में छात्रों को निरंतर आध्यात्मिक वातावरण प्राप्त होता है।

सभी छात्रों को आवास एवं भोजन की सुविधा नि:शुल्क रहती है।

नया सत्र 28 जून 2013 से प्रारंभ होगा।

स्थान अत्यंत सीमित है; अत: प्रवेशार्थी शीघ्र ही निम्नांकित पते से प्रवेशफार्म मंगाकर अपना प्रार्थना-पत्र अंक सूची सहित जयपुर प्रेषित करें।

यदि दसवीं का परीक्षाफल अभी उपलब्ध न हुआ हो तो पूर्व परीक्षाओं की अंक सूची की सत्यप्रतिलिपि के साथ प्रार्थनापत्र भेज सकते हैं।

दसवीं का परीक्षा परिणाम प्राप्त होते ही तुरंत भेज दें।

यदि प्रवेश योग्य समझा गया तो उन्हें **देवलाली-नासिक (महा.) में 21 मई से 7 जून, 2013 तक** होनेवाले ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर में साक्षात्कार हेतु बुलाया जायेगा, जिसमें उन्हें प्रारंभ से अन्त तक रहना अनिवार्य होगा। ह्न **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** प्राचार्य, श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.)
फोन :(0141) 2705581, 2707458, फैक्स - 2704127

विदेश कार्यक्रम